

!! श्रमण संघ हो अविचल मंगल, श्रमण संघ दर्पण से निर्झरित !!

शिव ध्यान धारा

श्रमण संघीय युगप्रधान आचार्य भगवन् श्री शिवमुनि जी महाराज के शुभ आशीर्वाद से

श्रमण संघीय मंत्री योगीराज श्री शिरीष मुनि जी महाराज के दिशा निर्देशन में

संपादक

श्री मुन्नालाल जैन-09210485716
ए-3/120, सेक्टर-5, रोहिणी, दिल्ली-85
Email - mlaljain@yahoo.com

1. सुज्ञ, विज्ञ, विद्वानों व लेखकों से अपनी कृतियां प्रकाशनार्थ भेजने का अनुरोध है।
2. कृतियां कागज के एक ओर सुस्पष्ट लिखित या टंकित और संक्षिप्त भेजने का कष्ट करें।
3. सभी संघ अपने क्षेत्रों के समाचार पूर्व मास की 30 तारीख तक भेजने का श्रम करें। तत्पश्चात् प्राप्त समाचार अगले अंक में ही स्थान पा सकेंगे।
4. लेखक से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
5. कृपया अपनी कृतियां संपादक के पते/ई-मेल पर भेजें।

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ सं.
□ संपादक की कलम से-मुन्नालाल जैन	3
□ शिव संदेश-आचार्य सम्राट पू. श्री शिवमुनि जी म.	4
□ "जयं चरे"-आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनि जी म.	5
□ ध्यान का स्वर्ण-सूत्र: लोगस्स-मंत्री श्री शिरीष मुनि जी म.	6
□ मोह-त्याग-आचार्य श्रीमद्विजय केशरसूरि जी म.	9
□ Diamond is Stone, Gold is Metal ... -Nisha Jain	12
□ ध्यान मन का विश्राम और परम कल्याण-सतीश जैन	13
□ कर्ता व भोक्ता कौन-शिव वाणी से उद्धृत	14
□ बीती ताहि बिसारी दे-शिव वाणी से उद्धृत	15
□ ध्यान-प्रभावना-जितेन्द्र जैन	16
□ The Religious Identity of Jain's -Dharamvir Jain	17
□ Self Medittion (An Experience)-Aman Batish	18
□ Thoughtness-Dev Atithi	19क
□ शिवाचार्य जन्मोत्सव विभिन्न प्रकल्पों के साथ हर्षोल्लास के साथ मनाया गया-जितेन्द्र जैन	20
□ आगामी आत्म ध्यान साधना शिविर	24



श्री महावीराय नमः
जय आत्म

जय आनन्द

श्री सीमंधर स्वामिने नमः
जय देवेन्द्र
जय शिव

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर
युग प्रधान, आगम अतिधन्वा,
आचार्य सम्राट् डा. श्री शिवमुनि जी महाराज

उपाध्याय

श्री मनोहर मुनि जी महाराज 'वाचनाचार्य'
श्री विशाल मुनि जी महाराज 'वाचनाचार्य'
श्री मूलचंद जी महाराज
श्री रमेश मुनि जी महाराज
श्री जितेन्द्र मुनि जी महाराज
श्री प्रवीण ऋषि जी महाराज
श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज

प्रवर्तक

श्री रूपचंद जी महाराज 'रजत'
श्री रमेश मुनि जी महाराज
श्री कुन्दन ऋषि जी महाराज
श्री सुमन मुनि जी महाराज
श्री रतन मुनि जी महाराज
श्री गणेश मुनि जी महाराज
श्री मदन मुनि जी महाराज
श्री प्रकाश मुनि जी महाराज 'निर्भय'

Visit us our website : www.jainacharya.org

Email : shivacharyaji@yahoo.co.in

Facebook : <http://www.facebook.com/shivmuni>

Twitter : <http://www.twitter.com/jainacharya>

Blogger : <http://acharyashivmuni.blogspot.in/>

YouTube : jainacharyaji

महामंत्री

श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद'

मंत्री

श्री शिरीष मुनि जी महाराज
(शिवाचार्य मुख्य सचिव)
श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज
श्री आशीष मुनि जी महाराज
श्री कमल मुनि जी महाराज 'कमलेश'

सलाहकार

श्री सुमति प्रकाश जी महाराज
श्री सहज मुनि जी महाराज
श्री सुकन मुनि जी महाराज
श्री सुरेश मुनि जी महाराज 'शास्त्री'
श्री तारक ऋषि जी महाराज
श्री रमणीक मुनि जी महाराज
श्री दिनेश मुनि जी महाराज
श्री विनय मुनि जी महाराज 'भीम'
श्री राम मुनि जी महाराज 'निर्भय'

प्रवर्तिनी

श्री यश कुंवर जी महाराज
श्री प्रभा कुंवर जी महाराज
श्री चंदना जी महाराज

www.shivacharyaji.org

shivacharyaji108@yahoo.com

join shivmuniji sms to 567678

Our Contact No. : 93501-11542

Android App : JAINACHARYA

संपादक

की कलम से.....



मुन्ना लाल जैन, संपादक

वर्तमानकाल में मानव द्रुत गति से भौतिक विकास कर रहा है। अपने शारीरिक आराम व सुविधाओं के साधनों की खोज में लगा हुआ है। अत्यधिक समय मानव का इन्हीं साधनों के संग्रह में व्यतीत हो रहा है। इन साधनों को उपलब्ध करने के लिए उसे अपनी सारी ऊर्जा व शक्ति दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा में लगानी आरंभ कर दी है जिसके परिणामस्वरूप मानसिक दबाव बढ़ जाने के कारण तनावग्रस्त जीवन हो गया है। इसके साथ ही अनेक प्रकार की शारीरिक व मानसिक व्याधियों ने आज के मानव को अपने चंगुल में जकड़ लिया है।



इससे भी अधिक भयावह स्थिति यह पैदा हो गई है कि मानव अपने मूल सत्य को भूल गया है। स्वयं को भूलने से अनेक प्रकार के दोष पैदा हो गये हैं। धर्म और नैतिकता केवल दिखावा मात्र बनकर रह गये हैं। अध्यात्म की तो बात ही छोड़िये। जबकि आज के युग में आवश्यकता है तो वह है अध्यात्म जगत में प्रवेश कर स्थायी शान्ति को प्राप्त करना।

स्वयं को जानना।

अपने को हल्का बनाना।

सांसारिक प्रपंचों की जकड़ से मुक्ति प्राप्त करना।

एक पाठक ने पूछा कि क्या ये सब इस वर्तमान काल की चकाचौंध में संभव है?

अपनी मधुर वाणी से इस प्रश्न का उत्तर देते हुए आत्मज्ञानी सद्गुरु आचार्य सम्राट श्री शिवमुनि जी म.सा. ने बताया कि हां, इस स्थिति को उपलब्ध किया जा सकता है। इस स्थिति को उपलब्ध करने के लिए आपको एक विधि अपनानी पड़ेगी और वह श्रेष्ठतम विधि है “आत्म ध्यान साधना”। कुछ समय अपने व्यस्त जीवन से निकालकर यदि मानव प्रतिदिन ‘आत्म ध्यान’ में लगाता है तो यह बात प्रमाणित है कि मानव को बहुत जल्दी ‘आत्मबोध’ प्राप्त होता है अतः वह इन समस्त आधि-व्याधियों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। इसीलिए आचार्यश्री जी ने मानव जाति को संदेश देते हुए नारा दिया है कि—‘तुम मुझे समय दो, मैं तुम्हें शांति दूंगा’।

शिव ध्यान धारा का प्रकाशन इसी उद्देश्य को लेकर किया जा रहा है कि आत्म-ध्यान साधना जन-जन तक पहुँचे, हम सब पाठकगण में आत्म जागृति पैदा हो और हम सब स्वयं को जानने का प्रयास करें। इसलिए ‘शिव ध्यान धारा’ का प्रत्येक लेख इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पठनीय है। अतः इसे पढ़ें और अन्य पाठकों तक पहुँचायें और स्व-पर के जीवन को सार्थक बनायें।

○○○



शिव संदेश

—युगप्रधान आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज

विलक्षण होगा 2015 का बृहद् साधु-सम्मेलन

श्रमण संघीय साधु सम्मेलन की घोषणा होने के साथ ही चतुर्विध संघ में खुशी की लहर दौड़ गई है। संपूर्ण राष्ट्र से साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं के मुझे बधाई संदेश मिल रहे हैं तथा सभी के सम्मेलन स्थल इन्दौर नगरी की ओर विहार करने के समाचार प्राप्त हो रहे हैं।

श्रावक वर्ग भी अपनी एकता का पूर्ण परिचय देते हुए सम्मेलन के भव्य आयोजन की तैयारी में संलग्न है। साथ ही सभी के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि इस साधु-सम्मेलन का स्वरूप कैसा होगा? व इस सम्मेलन का आधार क्या होगा?

चतुर्विध संघ की जानकारी के लिए मैं यह बता देना चाहता हूँ कि यह सम्मेलन पिछले सम्मेलनों की गतिविधियों से अलग कुछ विलक्षणता लिए हुए होगा।

जैसे इस सम्मेलन में श्रमण संघीय साधु-साध्वियों को आध्यात्मिक विकास का प्रशिक्षण दिया जायेगा जिसके माध्यम से उनको प्रशिक्षित किया जायेगा कि उनका संयम यथाख्यात कैसे हो सकता है।

जिज्ञासा हो सकती है कि कैसे होता है यथाख्यात संयम? यथाख्यात संयम का धारक साधु आत्मा का ज्ञाता होता है तथा यथाख्यात चारित्र के साधु का जैसा कथन होता है वैसा ही उसका आचरण होता है।

यथाख्यात साधु वह निर्ग्रथ होता है जो घर त्यागने के उपरांत किसी को भी अपना नहीं बनाता। वह सब प्रकार के बाह्य व आभ्यन्तर परिग्रह का त्यागी होता है।

यथाख्यात साधु अपनी मर्यादाओं का हृदय से पालन करता है। इन सारी मर्यादाओं का पालन मात्र कर्म निर्जरा के लिए करता है। श्रमण संघ के चारों तीर्थ आत्माथी बनें इस लक्ष्य की प्राप्ति का पुरुषार्थ इस सम्मेलन में किया जायेगा।

इस सम्मेलन में 'निश्चय' की साधना में 'व्यवहार' कैसे सहयोगी बने इसका चिंतन कर विशेष प्रकार के व्यवहार की उपयोगिता के नियम बनाये जायेंगे जिससे प्रत्येक साधु-साध्वी सरलता से उन्हें पालन करने में सक्षम होगा।

प्रवचन शैली को भी प्रभावशाली बनाने का प्रशिक्षण दिया जायेगा। श्रमण संघीय व्यवस्थाओं को भी सुंदर रूप दिया जायेगा जिसके द्वारा 'आचार्य पद' की प्रतिष्ठा को और अधिक दृढ़ बनाया जा सके।

अरिहंत देवों की आज्ञानुसार ही आचार्य सम्राट संघ को दिशा-निर्देश प्रदान करेंगे। इस प्रकार अध्यात्म के नव चिंतन समावेश से यह साधु-सम्मेलन विलक्षण होगा। अतः सब उत्साह पूर्वक साधु-सम्मेलन की शोभा बढ़ायें।

○○

“जयं चरे”

■ युगप्रधान आचार्य सम्राट् पू. श्री शिवमुनि जी म.

“जयं चरे” श्रमण की समस्त साधना का सार सूत्र है। समस्त ध्यान-परम्पराओं के इस बीज-सूत्र पर योगिराज शिवाचार्य के चिरंतन चिंतन से साक्षात्कार कीजिए।

आज विश्व में जितनी भी योग पद्धतियां प्रचलन में हैं, अधिकांश पतंजलि द्वारा रचित अष्टांग योग साधना का सार ग्रहण कर अपनाई गई हैं। लेकिन इन योग पद्धतियों में प्राण डालने का कार्य भगवान महावीर स्वामी की देशना “श्री दशवैकालिक सूत्र” में प्रयोगात्मक रूप से उपलब्ध होता है।

इस सूत्र में साधक को “होश पूर्वक” जीवन जीने के लिए प्रेरित किया है। क्योंकि बिना होश के कोई भी ध्यान योग की क्रिया केवल द्रव्य साधना बनकर ही रह जाती है। वह अन्तर की गहराइयों में उतर कर अस्तित्व का साक्षात्कार नहीं करने देती है। जबकि आत्मसाक्षात्कार ही प्रत्येक साधक की साधना का चरम लक्ष्य है।

श्री दशवैकालिक सूत्र में वर्णित—

**जयं चरे जयं चिट्ठे, जयं आसे जयं सये।
जयं भुजंतो भासंतो पाव कम्मं न बंधई।**

उपरोक्त गाथा जैन दर्शन की अति श्रेष्ठ गाथा है। जिसने अनेक मत संस्थापकों के जीवन चरित्र पर प्रभाव डाला तथा उन्होंने इसी विधि को अपनाकर उस परमतत्व का साक्षात्कार कर अपने अनुयायियों का मार्ग दर्शन किया। यह गाथा ध्यान का सार है। आत्मसाक्षात्कार का प्रथम और चरम बिन्दु है। कर्म निर्जरा का पावन-मंत्र है। जीवन का सन्तुलन है। आत्म समृद्धि और वैभव का प्रथम सोपान है। भगवान महावीर स्वामी ने साधकों को आत्मबोध देते हुए कहा है कि—हे साधको! मात्र सामायिक साधना के दौरान ही नहीं बल्कि अहर्निश आपको इस मूल गाथा का

स्मरण रखना चाहिये। यही वह रामबाण औषधि है जो साधक को समस्त प्रकार के अनर्थ दण्डों से बचाकर, संचित कर्मों का क्षयकर परम लक्ष्य की ओर अग्रसर करती है। जीवन में रूपान्तरण लाती है। मन, बुद्धि, चित्त एकाग्र होकर समग्रता प्राप्त करते हैं।

इस गाथा का अर्थ बहुत ही रहस्यपूर्ण है। प्रत्येक शब्द प्रबल भावों और ऊर्जाओं से परिपूर्ण है। प्रतिक्षण जागरण का संदेश है यह गाथा।

इसमें साधक अपना प्रत्येक क्षण पूर्ण ‘होश’ में गुजारता है। जयं यानि चेतनापूर्वक। चेतना का अभिप्राय होशपूर्ण। होशपूर्ण का अभिप्राय प्रमाद रहित। प्रमाद जहां समाप्त हो जाता है वहीं सच्चा जागरण घटित होता है।

अतः महावीर स्वामी कहते हैं कि हे साधक! चेतनापूर्वक चलो, चेतनापूर्वक खड़े हो, चेतनापूर्वक बैठो, चेतनापूर्वक शयन करो, चेतनापूर्वक खाओ, चेतनापूर्वक बोलो, यदि आप जीवन की ये समस्त क्रियायें चेतनापूर्वक करते हो, तो आपको कदापि पाप कर्मों का बंधन नहीं होगा। अतः हे आत्मन्! प्रत्येक क्षण चेतनापूर्वक क्रिया कर। ऐसा करने से आत्म-ध्यान साधना को बहुत ही जल्दी उपलब्ध हो जाओगे।

फिर समझो। ‘आत्मसाक्षात्कार’ आपके बहुत निकट है। होशपूर्ण जीने से एक या दो भवों में ही आप अपने चरम लक्ष्य ‘सिद्धालय’ को उपलब्ध कर सकते हो। आओ इसी क्षण से ‘जयं चरे’ को अपने जीवन का अनिवार्य अंग बनाएं!

'Let us perform carefully'

ध्यान का स्वर्ण सूत्रः लोगस्स

“षडावश्यक” प्रत्येक जैन श्रमण और श्रावक की साधना के अनिवार्य अंग हैं। षडावश्यक के संदर्भ में “चतुर्विंशतिस्तव” के वैज्ञानिक और आध्यात्मिक स्वरूप को स्पष्ट कर रही है मंत्री मुनीश्वर शिरीष की कलम!

—श्रमण संघीय मंत्री श्री शिरीष मुनि जी महाराज

सर्वज्ञ-सर्वदर्शी वीतराग भगवन्त प्रभु महावीर की वाणी आवश्यक निर्युक्ति के माध्यम से हम सब श्रवण कर रहे हैं कि साधक के लिए ‘छः आवश्यक’ बताये गये हैं जो पालन करने अनिवार्य हैं वो चाहे साधु हो या श्रावक हो, जो मोक्षगामी है उसके लिए छः आवश्यक अति आवश्यक बताये गये हैं।

प्रथम आवश्यक है—‘सामायिक’। यह हमारी मूल साधना है। जिसमें हम आत्मा के अन्तर्गत स्थित होते हैं। अनुष्ठान के रूप में कम से कम 48 मिनट एक आसन में स्थिर रहकर आत्मभाव में रमण करते हैं और भेद-विज्ञान के साथ 24 घण्टे की सामायिक की साधना साधु व श्रावक के लिए बतायी गई है। साथ में वह चतुर्विंशतिस्तव करे, 24 तीर्थकरों की भक्ति व स्तुति करे। क्योंकि भक्ति व स्तुति करते हुए साधक अपने लक्ष्य को तय करता है। चतुर्विंशतिस्तव में पूरी साधना समाहित है अगर वह विधिपूर्वक करे तो। सामायिक के अन्तर्गत ही विधिपूर्वक चतुर्विंशतिस्तव सम्पन्न होता है। सामायिक में उसे सहयोग मिलता है और समाधि में प्रवेश कर सकता है।

भगवान से पूछा—चउव्वीसत्थएणं भन्ते! जीवे किं जणयइ? भगवन्! चतुर्विंशतिस्तव से जीव को किस गुण की प्राप्ति होती है? भगवान् ने फरमाया—चउव्वीसत्थएणं दंसण विसोहिं जणयइ। चतुर्विंशतिस्तव से साधक की सम्यक्त्व की विशुद्धि होती है। क्योंकि वीतराग साधना की शुरुआत सम्यक्त्व से ही होती है। सम्यक्त्व केवल-ज्ञान का बीज है। सम्यक्त्व प्राप्ति के पश्चात् ही सकाम निर्जरा शुरू होती है। आधार है “सम्यक्त्व”। मिथ्यात्व टूटे और सम्यक्त्व में प्रवेश करे। सम्यक्त्व को और पुष्ट करने के लिए चतुर्विंशतिस्तव की साधना बताई गई है। इसलिए हमारे यहाँ लोगस्स पढ़ने की परंपरा है। अनेक लोग लोगस्स का जाप करते हैं, कायोत्सर्ग करते हैं।

लोगस्स के अन्तर्गत 24 तीर्थकर भगवन्तों की स्तुति-भक्ति की गई है।

दूसरा आवश्यक है—वन्दना। छः आवश्यक में और दिनभर बार-बार साधक को वन्दना करने के लिए कहा गया है। वन्दना करना अनिवार्य है चाहे वह बड़ा साधु है या छोटा साधु, चाहे श्रावक है या

श्राविका। जितनी वंदना करेंगे, जितना झुकेंगे उतना नीच गोत्रकर्म का क्षय होगा। विनयभाव प्रकटेगा, साधना में आगे बढ़ेगा। वंदन नहीं करना है, अकड़ के चलना है, अहंकार में रहना है तो साधना में प्रगति नहीं होगी इसलिए वंदना आवश्यक है।

चौथा है 'प्रतिक्रमण आवश्यक'। सामायिक की साधना करते हुए, चतुर्विंशतिस्तव की साधना करते हुए अतिक्रमण हो जाता है। भूल हो जाती है, बेहोशी में चले जाते हैं, भान चूक जाता है, क्षण हाथ से निकल जाता है। अब उस क्षण में वापिस कैसे आयें तो उसके लिए प्रतिक्रमण बताया गया है। प्रतिक्रमण करने से साधक पुनः अपने स्वभाव में स्थापित हो जाता है। फिर यात्रा आगे बढ़ पाती है। फिर जो क्षण बीत गये वापिस लौटकर नहीं आ सकते। लेकिन प्रतिक्रमण से वे क्षण वापिस ला सकते हैं। कोई घटना ऐसी घट गई जिसमें आप अतिक्रमण कर गये और कर्म आश्रव लग गया तो उसकी निर्जरा कैसे करनी? अब वह क्षण वापिस नहीं आ सकते लेकिन भगवान फरमाते हैं कि उसका प्रतिक्रमण करके पुनः स्वभाव में स्थापित होकर उस क्षण में किये हुए कर्मबंध को तुम क्षय कर सकते हो। ये है प्रतिक्रमण का लाभ, इसलिए इसे अनिवार्य बताया है। चाहे किसी भी काल के साधु हों, सबके लिए प्रतिक्रमण आवश्यक है। यह बात अलग है कि कुछ के लिए जिस समय गलती हुई उसी समय प्रतिक्रमण करने का विधि है और कुछ को प्रतिदिन नियमतः प्रतिक्रमण करने को कहा यानि सभी पाठ, सभी अतिचारों का प्रतिक्रमण करने को कहा गया है।

प्रत्याख्यान और कायोत्सर्ग: प्रत्याख्यान में क्या करना है? जहाँ-जहाँ मैंने अतिक्रमण कर दिया अब पुनः मैं आख्यान करता हूँ। विशेष रूप से

आख्यान करता हूँ, संकल्प करता हूँ, पुनः मैं यही गलती नहीं करूँगा। उसके शुद्धिकरण के लिए विशेष तपरूप अधिष्ठान गुरुकृपा से ग्रहण करता हूँ ताकि मेरी जागरूकता बनी रहे। ये प्रत्याख्यान किया है, संकल्प किया है कि मैं पुनः अतिक्रमण में न पहुँच जाऊँ।

कायोत्सर्ग एक उत्कृष्ट तप है। विभिन्न प्रकार के कायोत्सर्ग बताए गए हैं। कहीं ईर्यापथिक का, कहीं चतुर्विंशतिस्तव का, कहीं अतिचारों का और अंत में कायोत्सर्ग का। 'कायोत्सर्ग' साधक के लिए आवश्यक है। आवश्यक निर्युक्ति में छह प्रकार से इन 'आवश्यक' की विशेष व्याख्या की गई है। नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की दृष्टि से हर एक पर विस्तृत रूप से गहराई से बात की है।

चतुर्विंशतिस्तव की गिनती करने की अपेक्षा प्रश्न है चतुर्विंशतिस्तव की साधना कैसे करें?

अगर आप उसको भावपूर्ण तरीके से पढ़ते हैं तो आपको पढ़ते-पढ़ते समाधि लग सकती है। समाधि का अभ्यास बढ़ सकता है। पूरा सामायिक काल भी उसमें व्यतीत हो सकता है।

“लोगस्स” का अर्थ लोक में। ऊर्ध्व, मध्य और अधोलोक आपके शरीर में ही हैं। साधना कर रहे हैं तो हम अपने भीतर के लोक को देखेंगे। पूरे लोक में “उज्जोयगरे” यानि उद्योत (प्रकाश) करने वाले मेरे पूरे शरीर में, सिर से लेकर पांव के अंगूठे तक प्रकाश हो गया है। प्रकाश किसका? “धम्म तित्थयरे जिणे” भगवान की कृपा से जिन्होंने मुझे आत्मा के धर्म की पहचान कराई। आत्मा का धर्म यानि आत्मा का स्वभाव, इसकी मुझे पहचान करवाई, आत्मा का ज्ञान रूपी जो प्रकाश है वह पूरे लोक में, शरीर में, पूरे आत्मप्रदेशों में फैला हुआ है।

“अरिहते कित्तइस्सं” जिन अरिहंतों ने मुझे इसका ज्ञान कराया उनका मैं कीर्तन करता हूँ, भक्ति करता हूँ, उनकी शरण में जाता हूँ। प्रभो! मैं तो अनंतकाल से अज्ञान में ही भटक रहा था। आपकी कृपा से मुझे आत्मा का प्रकाश मिला, आत्म-बोध हुआ, आत्म-प्रदेशों की जानकारी मिली। एक-एक आत्मप्रदेश में अनंत-ज्ञान समाया हुआ है। पूरे लोक में आत्म-ज्ञान फैला हुआ है और यह ज्ञान तीर्थकर भगवान ने दिया है।

भगवान से पूछा गया कि धर्म किसे कहते हैं? तो भगवान ने कहा कि—“वत्थुसहावो धम्मो”। वस्तु का अपना स्वभाव ही उसका धर्म है। हमें दुनिया की वस्तुओं से कुछ लेना-देना नहीं है। हमें अपने आत्मा के स्वभाव से ही लेना देना है। इसलिए हमें अपनी आत्मा के स्वभाव में जाना है। अरिहंत भगवान की कृपा से मैं अरिहंत भगवान का कीर्तन करता हूँ।

“चउविसंपि केवली”—वे तीर्थकर कितने हैं? हर अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी काल में 24 तीर्थकर होते हैं। उनका नामकरण - “उसभ” से होता है। पूरे लोक में ज्ञान का प्रकाश फैलने के बाद हम अपने मूलाधार चक्र पर आ जाते हैं वहाँ से हमारी यात्रा ऊपर की ओर बढ़ती है। मूलाधार चक्र पर

साधक करता है ‘उसभ’ यानि ऋषभदेव का ध्यान। ऋषभदेव भगवान जिन्होंने धर्म का प्रारंभ किया। तीर्थ की स्थापना की। वे ऋषभदेव भगवान कैसे हैं? उनका चिन्ह है बैल जो परीषहों को जीतने का प्रतीक है, इन्द्रियों को जीतने का प्रतीक है। हमारी प्रार्थना है कि हे प्रभो! मुझे शक्ति दो, मैं भी अपनी इन्द्रियों के विषयों को जीत सकूँ। प्रत्येक अवस्था में सम रह सकूँ। वृषभ का चिन्ह सहिष्णुता का भी प्रतीक है। वृषभ बीज को बोने वाला होता है। प्रभो! आपने सम्यक्त्व रूपी बीज भरत-क्षेत्र में बोकर अनंत उपकार किया। वृषभ की भांति मेरे भीतर की क्षमता बढ़ती रहे। प्रभो! आपने 13 माह निर्दोष आहार-पानी न मिलने पर भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया। प्रभो! आपकी कृपा से हम भी मर्यादित बनें। प्रभो! आपने 4000 साधुओं के साथ संयम लिया। वे सभी आपको अकेला छोड़कर सुविधा-भोगी बन गये। लेकिन फिर भी आप एकत्व को पुष्ट करते रहे। बोधिबीज को देते रहे। कोई निंदा करे, कोई प्रशंसा करे, कोई पूजा करे, अर्चना करे, प्रत्येक अवस्था में जैसे आप समस्थिति में रहे मुझे भी ऐसी समस्थिति प्राप्त हो। लोकभर के वृषभ जाति के जीवों के प्रतिमंगल मैत्री। प्रभु! इन्हें भी वीतराग धर्म मिले। ○○

यावन्मोहो बली पुंसि दीर्घसंसारितापि च ।
न तावत् शुद्ध चिद्रूपे रुचिरत्यन्त निश्चला ॥

“मनुष्य में जब तक मोह की प्रबलता हो, और दीर्घ संसार परिभ्रमण करना रहा हो तब तक शुद्ध आत्मा में निश्चल रुचि नहीं होती।”

जो मूढ़ बनावे सो मोह। आत्मा के प्रति प्रीति ने होने दे सो मोह। पाँच इन्द्रियों के विषयों में आसक्त बनावे सो मोह! जीव में जब तक मोह की प्रबलता हो तब तक आत्मा में सच्ची प्रीति नहीं होती। साथ ही जिसे संसार में दीर्घ काल तक भ्रमण करना हो ऐसे जीव को भी आत्मा के प्रति सद्भावना नहीं ही होती।

मोह का स्वरूप

ये मेरे और ये पराये - इस तरह सजीव तथा निर्जीव पदार्थों के सम्बन्ध में चिंतन करना मोह है। क्योंकि तात्त्विक दृष्टि से विचार करने पर विश्व में किसी का कुछ भी नहीं है। इसने मुझे आदर दिया, इसने मेरा अपमान किया, इसने मेरी उज्ज्वल कीर्ति बढ़ाई और इसने मेरी अपकीर्ति की ऐसा चिंतन करना ही मोह है।

मोह को जीतने के उपाय

“मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? कहाँ से कैसे सुखी बनूँ? किसका आश्रय लूँ? क्या बोलूँ? ऐसा सब कुछ मोह का ही चिंतन कहलाता है। सजीव-अजीव पदार्थ

पर राग करना या द्वेष रखना—यह सब मिथ्याबुद्धि ही मानी जाती है। क्योंकि आत्मा केवल चिद्रूप है। “मैं शरीर हूँ अथवा शरीर मेरा है, मैं पुरुष हूँ, मैं स्त्री हूँ, अथवा ये सम्बन्धी मेरे हैं”—तात्त्विक दृष्टि से ऐसा विचार करना मोह है। इस मोह को जीतने का उपाय यह है कि “वे मैं नहीं, और मेरे वे नहीं हैं, मैं शुद्ध आत्मा हूँ।” बार-बार ऐसा चिंतन करना चाहिए और उसके दृढ़ संस्कार मन पर जमाने चाहिए।

मोह का प्रभाव

हे आत्मन्! तू अपनी चिन्ता कर, दूसरों की चिन्ता करना छोड़ दे। चिन्ता करने से कार्य सिद्ध नहीं होते। तू दूसरे के सुख-दुःख में घट-बढ़ या कमी-बेशी नहीं कर सकता। जिस मनुष्य ने जैसे परिणामों (मन के अर्थात्साधनों) के साथ, जैसे रस के साथ जो-जो कर्म बांधे हैं वे कर्म वैसे रस के साथ और वैसे परिणाम के साथ भोगे बिना उसे छुटकारा नहीं मिल सकता। काल, काल का काम करता है, दिन आता है, रात आती है, ऋतुएँ नियमित आया करती हैं, जाड़े के मौसम के बाद गर्मी का मौसम, और गर्मी के बाद वर्षा ऋतु, इस तरह काल का यंत्र विश्व में सुव्यवस्थित चला करता है। उसी तरह कर्म का चक्र भी किसी का पक्षपात किये बिना राजा को रंक और इन्द्र को और बिष्ठा के कीड़े के रूप में उचित बदला दिया ही करता है। इसमें पक्षपात नहीं चलता, किसी की सिफारिश काम नहीं लगती।

घूस-रिश्वत नहीं दी जा सकती। गरीबों और धनाढ्यों का न्याय, न्याय की एक ही तराजू में तोला जाता है। अपना उद्धार या विनाश अपने भले-बुरे कर्मों से ही होता है। जैसे काल, काल का काम करता है वैसे कर्म, कर्म का काम करते हैं। वे पूर्व-उपार्जित कर्म ही फल देते हैं। इस के बावजूद भान खोकर ऐसा सोचना या मानना कि “इसने मुझे दुःख दिया और इसने मुझे सुख दिया, इसे मैं सुखी करूँगा।” सब मोह का ही प्रभाव है। हे आत्मदेव! परायी चिन्ता छोड़ दो। असली शत्रु को खोज निकालो। असली अपराधी को पकड़ो और उसे सजा दो। अपनी भूल तुम खुद सुधारो, असली अपराधी तुम स्वयं हो। आत्मभान भूलकर मोह के वशीभूत हुआ तुम्हारा आत्मा ही तुम्हारा शत्रु है। उसे दंड दो, उसे सुधारो! उसे सुधारने के लिए उस शुद्ध आत्मा के उपयोग में तदाकार परिणति बनाये रखो।

मोह का पहला स्थान

मोह के निकट का पहला स्थान तुम्हारा शरीर है, उसका विचार करो। जिसे सुखी करने के लिए तुम दिन रात न करने योग्य कार्य करते हो, अनेक जीवों का संहार करते हो, अनेक जीवों को कष्ट देते हो, राग-द्वेष करते हो, उस शरीर की उत्पत्ति का विचार करो। दुर्गंध और मल के भाजन स्वरूप, वीर्य और रज से अमुक विधि से जो बना है और जिसे मनुष्यों ने अपनी इच्छा के अनुसार अमुक नाम दे दिया वह शरीर तुम्हारा कैसे हो सकता है? कोई उसका वर्णन करे, स्तुति करे या निंदा करे इससे तुम्हें क्या लाभ और क्या हानि? आत्मदेव! तुम तो शुद्ध चिद्रूप हो, इसलिए तत्त्वतः वह प्रशंसा या निंदा उस शरीर की ही है, तुम्हारी नहीं।

मोह राजा का जाल

अहा! मोह के कारण आत्मभान खोये हुए

कोई जीव कीर्ति के लिए व्यर्थ प्रयत्न करते हैं, कोई दूसरों को खुश करने की कोशिश करते हैं, कोई भाट-चारण की तरह हाँ में हाँ मिलाकर उसी के गीत गाते हैं, कोई इन्द्रियों के विषयों की प्राप्ति के लिए तड़प रहे हैं। कोई अपने शरीर को दीर्घ काल तक जीवित रखने के उद्देश्य से विविध जाति की औषधियों और मात्राओं का सेवन कर रहे हैं, कोई अपनी वंशवृद्धि के लिए जोगी-जति के पीछे भटक रहे हैं, कोई धनसंचय करने के लिए देश-विदेश का पर्यटन करते हैं, कोई धन की सुरक्षा के लिए शस्त्रसज्ज पहरेदारों को घर के चारों ओर नियुक्त रखते हैं। कोई पांडित्य पाने के लिए अनेक पुस्तकों और भाषाओं का अध्ययन कर रहे हैं। कोई अपने समुदाय को टिका रखने के लिए विधि-निषेध की बडी दीवारें चुन रहे हैं और उनमें अज्ञानी मनुष्यों को भरमा कर, ललचाकर ऐसे भर रहे हैं जैसे बाढ़ में भेड़-बकरियाँ बन्द की जाती हैं। विश्व के जीव इस तरह की अनेकानेक प्रवृत्तियों में जुटे हुए हैं। इसमें उनका ध्येय होता है सुखी होना, शान्ति पाना, बड़े बनना। उनका यह ध्येय सिद्ध नहीं होता क्योंकि यह भूल-भूलैया वाला मोह राजा का बिछाया हुआ जाल है जिसमें जीव पक्षियों की तरह ऊपर-ऊपर की चेष्टाओं से होश खो कर फँस जाता है।

सच्चा सुख

सच्चे बुद्धिमान् तो एक ज्ञान-स्वरूप आत्मा को ही सुख तथा शान्ति का स्थान मानकर, मोह का त्याग कर आत्मा पर प्रेम करते हैं। पुण्य प्रकृति से प्राप्त हुए देवों के और मनुष्यों के सुख तो सूखी घास के समान हैं। उन्हें ठीक पचा सके तो गाय या भैंस की तरह सूखी घास में से दूध और दूध में से घी बनाया जा सकता है, किन्तु उसका सही उपयोग न करे अर्थात् उसका दुरुपयोग करे तो जैसे घास में आग लगाने से उसकी राख हो जाती है वैसे ही उस

सुख का नाश होने के साथ-साथ भावी जन्म भी दुःखमय प्राप्त होते हैं। पुण्य की प्रकृति के कारण जो अनुकूलता मिली हो उस का लाभ उठाकर आत्म पथ पर आगे भी बढ़ा जा सकता है और मोह में आसक्त हो कर शक्ति का दुरुपयोग कर अनेक जीवों को दुःख देकर विषयों में आसक्त बन कर पीछे हटना भी संभव है। आश्चर्य की बात है कि अल्प बुद्धि वाले जीव मोह के घर के समान लक्ष्मी, स्त्री, शरीर, सन्तति और जमीन-जायदाद में सुख मान बैठे हैं।

जीव का भ्रम

यह जीव परमार्थतः बँधा हुआ नहीं है फिर भी मोह-पाश से भयभीत हो कर तोते की तरह या बन्दर की तरह अपने अज्ञान के कारण अपने आपको बँधा हुआ मानकर उसमें अधिकाधिक हैरान होता है। पवनचक्की के एक हिस्से पर बैठ कर तोता मौज कर रहा था, उतने में पवनचक्की घूमने लगी। तोते को लगा कि मैं गिर जाऊँगा, अतः उसने उस सीखचे को जोर से पकड़ लिया। फलतः वह पवनचक्की के साथ ऊँचे-नीचे फिरने लगा। जैसे-जैसे उसे जोर से पकड़ता है वैसे-वैसे अपने आपको उसके साथ ही जकड़े रखता है, यदि उसे छोड़ दे तो शीघ्र ही उससे अलग हो सकता है, किन्तु अपनी गलती से और 'छोड़ूँगा तो गिर जाऊँगा' इस अवास्तविक भ्रम के कारण परेशान होता है। इसी तरह यह जीव भी मोह को एवं मोह के साधनों को ज्यों-ज्यों पकड़ता जाता है त्यों-त्यों अधिकाधिक बँधता जाता है तोते की भाँति। सही मुक्ति का उपाय तो यही है कि उसे वह सब कुछ छोड़ देना चाहिए। इस के सिवा जीव के छूटने का और कोई उपाय नहीं है।

जीव की मुक्ति का उपाय

सँकरे मुँह वाले बर्तन में हाथ डाल कर बंदर ने उसमें रही हुई वस्तु से मुट्ठी भर ली। मुहँ सँकरा

होने की वजह से भरी हुई मुट्ठी बाहर नहीं निकल सकी। अज्ञान तथा मोह के कारण बन्दर ने समझा कि किसी ने मुझे भीतर से पकड़ रखा है, अतः वह चीं चीं कर चिल्लाने लगा। परन्तु मुट्ठी न खोलने के कारण वहाँ से सरक नहीं सका, और उसको मालिक के हाथों मार खानी पड़ी। इस बन्दर के छूटने का एक ही उपाय था कि वह मुट्ठी में भरी हुई वस्तु को छोड़ दे। इसी प्रकार से मोह में फँसे हुए मनुष्य जड़, क्षणभंगुर वस्तु को अपनी मान कर ममत्व की मुट्ठी में पकड़े रखते हैं और हैरान होते हैं, दुःख भोगते हैं, और अपने आप को बँधा हुआ, किसी सम्बन्धी के द्वारा पकड़ा गया मानते हैं। लेकिन बन्दर की तरह अपनी ममत्व की मुट्ठी खाली कर दें, छोड़ दें, तो वे मुक्त ही हैं। अपना अज्ञान या अपना मोह ही जीव को बंधन में डालता है। उसके अलावा दूसरा कोई उसे पकड़का रखने वाला नहीं है।

मोही का त्याग

जो जीव इन्द्रियों के विषयों तथा उनके साधनों की रक्षा में सदा व्यग्र रहते हैं उन्हें आत्मा की चिन्ता कहाँ से हो? उनकी बुद्धि निर्मल कहाँ से हो? उन्हें शुद्ध चिद्रूप की प्राप्ति कहाँ से हो? और उसके अभाव में आत्मा से उत्पन्न होने वाला सुख कैसे मिले? जीव को प्रथम शरीर में भ्रान्ति होती है, फिर पर द्रव्यों के सम्बन्ध में होने वाली, अति संताप करने वाली चिन्ता में सतत वृद्धि होती है। धन्य है उन आत्माओं को, जो पर-द्रव्यों का त्याग कर ज्ञान और आनंद के घर के समान अपने आत्मभाव में प्रवृत्ति करती हैं। ऐसी पवित्र आत्माओं को बारंबार प्रणाम करता हूँ। शुद्ध आत्म-रमण को छोड़, दूसरे के कार्य की या बर्ताव की जो चिन्ता कर रहे हैं, वे अभागे जीव चिन्तामणि रत्न का त्याग कर पत्थर ग्रहण करते हैं।

ज्ञान स्वाधीन सुख को प्रकट करता है। उसकी प्राप्ति आत्म-चिन्तन से होती है। फिर भी भाग्यहीन

DIAMOND IS STONE, GOLD IS METAL AND MONEY IS PAPER, BUT YOU ARE IMMORTAL

—Vitrage Sadhika Shasan Gaurav Nisha Jain, Surat

All these diamond, gold and money will stay as it is. It changes its location but you are something which has got this birth to understand the importance of life. Its your perception how you take these. You run before it, you waste your precious time which you can share with your family, your people, your friends and the most important for your innerself.

All that which is precious - is you, your life. The immortal being which had taken birth in form of this body. If this goes you loose doing nothing. Meditate to stay with yourself. Meditate to learn more about yourself. Meditate to catch the current moment.

Know what is important around you, better if the innerself is regarded the most. Live the current moment, and for this you got to stay away from the greed of all these. So never allow your conscious to run before these.

जीव उसका त्याग कर कोई विलक्षण वस्तु प्राप्त करना चाहते हैं।

मोही व्यक्ति आत्म-ज्ञान के लिए अपात्र

अंधे के आगे नाच, बहरे के आगे गीत, मरण की अंतिम घड़ी में रोग का इलाज, अज्ञान तप, ऊषर भूमि में बुवाई, बिन प्यासे को पानी, स्वार्थी मनुष्यों की मैत्री, अभव्य को निर्दोष विधि में रुचि, काले कँबल पर रंग चढाना, और श्रद्धा रहित को दिया गया मंत्र जैसे वृथा है वैसे ही जड़ माया पर प्रीति करने वाले को दिया जाने वाला आत्मज्ञान व्यर्थ होता है। मोह में मूढ़ बने हुए जीव हर क्षण पर द्रव्यों का स्मरण करते हैं, परंतु मोक्ष के लिए अपने ज्ञानानन्दमय आत्माओं को कभी याद नहीं करते।

मोह को जीतने का उपाय

विचार करने पर मालूम होता है कि मोह से बढ़कर कोई प्रबल शत्रु नहीं है, अतः प्रबल पुरुषार्थ कर के भी उसे जीतना चाहिए। इस संसार रूपी कुएँ के मोहरूपी कीचड़ में जगत अनादि काल से फँसा हुआ है, आत्मा के ज्ञान और ध्यान रूपी रस्सों से उसका उद्धार के सिवा अन्य सभी कार्य मोह से उत्पन्न हैं। मोह से कर्म बंध होता है और कर्म-बन्ध से दुःख होता है, अतः मोह ही बड़ा शत्रु है। सब कार्यों को एक ओर रखकर मोहरूपी शत्रु का नाश करने के लिए आप शुद्ध चिद्रूप आत्मा का उत्तम ज्ञान प्राप्त करें और उसका ध्यान करें।



ध्यान: मन का विश्राम और परम कल्याण

—सतीश जैन, राष्ट्रीय महामंत्री, श्रावक समिति

जाग्रत अवस्था में हमारा शरीर व मन कार्यरत रहते हैं लेकिन रात्रि में निद्रा के माध्यम से शरीर को विश्राम मिल जाता है किन्तु मन को सामान्यतः विश्राम नहीं मिलता। क्योंकि निद्राकाल में भी मन अपने व्यावसायिक, पारिवारिक व सामाजिक जीवन के शेष कार्यों को निबटाने में निरन्तर प्रवृत्त रहता है जिसका अनुभव हम स्वप्न के रूप में करते हैं। स्वप्न में हमारा शरीर निष्क्रिय हो जाता है और इसके साथ हमारे शरीर से जुड़ी इन्द्रियां तथा हमारे मन का एक मुख्य स्तर चेतनमय भी निष्क्रिय हो जाता है। लेकिन मन के अन्य दो स्तर—अवचेतन व अचेतन मन सक्रिय रहते हैं और स्वप्न इन्हीं दो मन के स्तरों—अवचेतन व अचेतन मन का खेल है। स्वप्न इन दो मन के स्तरों पर संचित पूर्व जन्म की दमित इच्छाओं, वासनाओं व अपूर्ण तमन्नाओं की अभिव्यक्ति है।

मनोविज्ञान का मानना है कि मन का 90 प्रतिशत अवचेतन व अचेतन मन है। चेतन मन जो कि तर्क व बुद्धि प्रधान है वह पूरे मन का शेष केवल 10 प्रतिशत ही है। लेकिन जाग्रत अवस्था में चेतन मन पूर्णतया सक्रिय व हावी रहता है पर स्वप्न अवस्था में चेतन मन जिसमें बुद्धि भी सम्मिलित है निष्क्रिय होता है इसलिए यह अवचेतन व अचेतन स्तर पर होने वाली घटनाओं का नियंत्रण नहीं कर पाता है अतः सपने में असंगत, असम्बद्ध, बेढंगी और बेतरतीब घटनाएँ घटती हुई प्रतीत होती हैं। फलस्वरूप निद्रा की स्थिति में भी मन को पूर्णतया विश्राम नहीं मिल पाता है। यही थका हुआ अशान्त मन भटकता है तथा इन्द्रियों के सहयोग से बाह्य जगत में विश्राम खोजता है। मन इन्द्रियों पर अपना प्रभुत्व जमा लेता है। अपने ही मन पर अपना स्वामित्व नहीं रहता है और हम मन के प्रति विवश हो जाते हैं। हम मन को केन्द्रित करने की अपेक्षा मन के कहने में केन्द्रित हो जाते हैं।

शरीर, आत्मा और मन का आपस में गहरा सम्बन्ध है। शरीर व आत्मा का सीधा संबंध है। मन इनके बीच

की कड़ी है जो क्रिया-प्रतिक्रिया के लिए शरीर व आत्मा दोनों को प्रेरित करता है। मन शरीर से जुड़ा होने के कारण मन की अशान्ति के परिणामस्वरूप शरीर को भी दुःख व पीड़ा भोगनी पड़ती है। शरीर का संतुलन मन के सन्तुलन से ही साधा जा सकता है। मन को संतुलित करने के लिए सरल उपाय है—ध्यान साधना अर्थात् मन का विश्राम।

ध्यान एक ऐसी साधना है जिसके माध्यम से मन को केन्द्रित कर सकते हैं। यदि व्यवस्थित रूप से निरन्तर ध्यान किया जाये तो मन को पूर्ण विश्राम प्राप्त होता है। जैसे-जैसे ध्यान लगने लगेगा और गहरा होने लगेगा वैसे-वैसे मन को विश्राम और तनाव से मुक्ति व शान्ति का आभास होने लगता है। मन की उच्छृंखलता व अस्थिरता पर अपना नियंत्रण बढ़ता है। मन की पकड़ इन्द्रियों पर कमजोर पड़ जाती है अर्थात् मन अपने नियंत्रण में आ जाता है और मन की धारा ही बदल जाती है।

ध्यान से मन में संवेग उत्पन्न होता है, भावों का परिवर्तन होता है और मन की दिशा बदलती है। जैसे-भोग से योग की ओर, चिन्ता से चिंतन की ओर, वासना से उपासना की ओर, आसक्ति से अनासक्ति की ओर, अशांति से शान्ति की ओर, राग से वैराग्य की ओर मुड़ना। दूसरे शब्दों में मन का शरीर से हटकर आत्मा से लगाव।

जीवन के हर पहलु में सामंजस्य, संतुलन तथा आन्तरिक व बाहरी अनुशासन को प्रोत्साहन मिलता है। इससे चरित्र में सुधार, चेहरे पर ओज, वाणी में मधुरता, शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास होता है। आत्मकल्याण के लक्ष्य का मार्ग ध्यान साधना के प्रयोगों से स्वतः दृष्टिगोचर होता है।

००

कर्ता व भोक्ता कौन?

आत्मा अजन्मा है। आत्मा मृत्यु को भी प्राप्त नहीं करता है। जीवात्मा समस्त प्रकार के क्रियान्वयन से पृथक् है। यह अनादि है। जन्म शरीर का है। शरीर का सृजन माँ और पिता की सृजन शक्ति के आप में मिलने के बाद होता है। इस शरीर सृजन के अन्दर जो सतत् है, जो सत्य है, जो परमतत्व है जो शाश्वत है, जो अनश्वर है, जो अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख व अनन्त वीर्य के स्वभाव वाला है, अपने पूर्व कर्मों के पुद्गलों के अनुसार 84 लाख योनियों और चार गतियों में उसी प्रकार के कर्म पुद्गलों से निर्मित शरीर में अपना स्थान ग्रहण कर लेता है। इस परमतत्व जीवात्मा के संग अनादि काल से साथ लाये कर्म वर्गणा के पुद्गलों के माध्यम से ही शरीर के समस्त कार्य होते हैं। आत्मा न स्वयं कुछ करता है और न कभी कुछ कराता है, और न ही कुछ भोगता है, जो कुछ भी घटित हो रहा है यह आत्मा उसको केवल जानता और देखता है। उससे पूर्ण रूप से अलिप्त है। जैन आगमों में लिखा है—

**अप्या कत्ता विकत्ता य दुहाण य सुहाण य।
अप्या मित्तममित्तं च दुप्पट्ठय सुप्पट्ठओ॥**

इस गाथा के अनुसार ऐसा प्रकट होता है कि आत्मा ही स्वयं कर्ता है और आत्मा ही भोक्ता है। आत्मा ही अपना मित्र है और आत्मा ही अपना स्वयं

**ज्ञाता-द्रष्टा भाव ही
आत्मा का अनादि-निधन स्वरूप है।
उस अनादि-निधन स्वरूप के अन्वेषण की
विधि बता रहे हैं श्रद्धेय शिवाचार्य श्री
इस आलेख में।**

का शत्रु है। फिर शरीर का क्या मतलब कि वह कुछ करे—शरीर तो जड़ है, शरीर तो नश्वर है, वह तो यहीं रह जाता है फिर सुख और दुःख शरीर कैसे भोगता है?

आचार्य भगवन् श्री शिवमुनि जी महाराज हमें ज्ञान कराते हुए स्पष्ट करते हैं कि—निश्चय नय से यह जीवात्मा न करता है, न भोगता है क्योंकि यह जीवात्मा तो अनन्त सुख का भण्डार है। इसका स्वभाव ज्ञाता-द्रष्टा भाव है जो स्थायी और शाश्वत है। इसके स्वभाव को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है परन्तु कर्म वर्गणा के पुद्गलों द्वारा आत्मा के स्वरूप को आच्छादित किया जाता रहा है। अतः वही पुद्गल जड़ होते हुए भी जड़ द्वारा अपनी प्रकृति, स्थिति, अनुभाग द्वारा क्रियायें कराते हैं। कर्ता और भोक्ता मात्र शरीर है। सुख और दुःख शरीर के हैं, आत्मा के नहीं। आत्मज्ञानी बताते हैं कि—आत्मा पर जब मिथ्यात्व का प्रभाव पड़ता है तो वह आत्मा निज स्वभाव से विभाव दशा में चली जाती है और उस विभाव की दशा मात्र से ही इस शरीर के माध्यम से सुख और दुःख का अनुभव करती है तथा कर्ता और भोक्ता मानी जाती है।

व्यक्ति शरीर के तल पर ही जीता है। यदि वह शरीर के तल पर जीना छोड़कर आत्मा के तल पर जीना सीख जाये तो उसे ज्ञान हो जायेगा कि आत्मा बिल्कुल निर्लिप्त है। आत्मा केवल द्रष्टा और ज्ञाता है। हे आत्मन्! होश में आ। जाग! और अभी से स्वयं को जानने में लग जा क्योंकि आत्मसाक्षात्कार से ही समस्त प्रश्नों का समाधान है।

—शिववाणी से उद्धृत

शिव ध्यान धारा / सितम्बर 2014

बीती ताहि बिसारी दे

क्षण में सातवीं नरक और क्षण में मोक्ष का अनुसंधान करने वाले मन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत कर रहे हैं श्रद्धेय शिवाचार्य श्री चंद पंक्तियों में—

समस्त आगम, सूत्र, ग्रंथ धार्मिक पुस्तकें इस तथ्य को मानते हैं कि मन बड़ा चंचल है। यह बिना लगाम के घोड़े के समान दौड़ता रहता है। मन को ही समस्त कर्मों का जनक बताया है। इसी कारण विद्वान कहते हैं कि :-

‘मन एव मनुष्याणां कारणं बंध-मोक्षयो’।

मन ही जीव के बंधन और मुक्ति का कारण है। मन द्वारा किया गया चिन्तन जीव को क्षण में महामोहनीय कर्मों का बंधन करा देता है और अन्तर्मुहूर्त में परमतत्व को प्राप्त करने में सहायक है। जैन आगमों में इस तथ्य की पुष्टि के लिए एक कहानी आती है जो बहुत ही रुचिकर है। प्रसन्नचंद्र राजा ने राज्य त्यागकर पुत्र का राज्याभिषेक कर साधुवृत्ति धारण की। ध्यान साधना में संलग्न हो गए। अचानक पुत्र पर शत्रु ने आक्रमण किया। राज्य को चारों ओर से घेर लिया। ध्यान-मग्न प्रसन्नचंद्र राजर्षि के कानों में शब्द पड़े कि उसका पुत्र शत्रु भय से संकट में है। शब्द सुनते ही मन की चंचलता तीव्र हुई और उसी क्षण मन में विचार उत्पन्न हुआ कि अभी मुझे जाकर पुत्र की सहायता कर शत्रु का विनाश करना चाहिये। इन्हीं मन के भावों ने

सातवें नरक के कर्म पुद्गलों को आकर्षित करने को बाध्य कर दिया।

कुछ ही क्षण बाद मन पलटा। भाव ऊपर चढ़े और मन कह उठा—

‘बीती ताहि बिसारी दे आगे की सुधि ले’।

और भाव इतने ऊँचे चढ़े कि अन्तर्मुहूर्त में ही प्रसन्नचंद्र को केवल-ज्ञान, केवलदर्शन प्रकट हो गया। चार घन घाति कर्मों का क्षय हो गया। सिद्ध गति प्राप्त हो गई।

अतः हे आत्मन्! जो बीत गया उसे भुला दे, उसको अपने मन में स्थान मत दे। चाहे वे सुखद स्मृतियां हों या दुःखद। ये दोनों प्रकार की स्मृतियां बंधन का कारण हैं। हमें यदि बंधन से छूटना है तो बीते हुए काल का चिंतन सम्पूर्ण रूप से समाप्त करना होना।

वर्तमान में जीओ। वर्तमान में जीना ही कर्म वर्गणा के परमाणुओं के आकर्षण को रोकता है। अतः जागो और पुरानी स्मृतियों को छोड़कर आत्मरमण में लग जाओ।

—शिववाणी से उद्धृत

ध्यान प्रभावना

आचार्य भगवन् की प्रेरणा से विभिन्न स्थानों पर हुई ध्यान प्रभावना

■ श्री शुभम मुनि जी म.सा.

भोपाल :- दिनांक 21 सितम्बर को भोपाल श्री संघ के आग्रह पर एक दिवसीय आत्म-ध्यान साधना शिविर का आयोजन हुआ। इस शिविर में 49 शिविरार्थियों ने भाग लिया। साधिका श्रीमती किरण जैन व कमल जैन ने बहुत ही सुन्दर ढंग से सभी शिविरार्थियों को आनंद, ज्ञान, शांति मुक्ति के मार्ग का परिचय कराया। इस शिविर को सफल बनाने में श्री अशोक पीतलिया का विशेष सहयोग रहा।

कुप्पकलां:-आदीश्वर धाम कुप्पकलां में दिनांक 26 व 27 सितम्बर को दो दिवसीय आत्म-ध्यान शिविर आयोजन हुआ। इस शिविर में 30 के आसपास शिविरार्थियों ने भाग लिया। आत्म-ध्यान-शिविर में आत्मार्थी बंधुओं ने उत्कृष्ट वीतराग साधना का लाभ लिया। कुप्पकलां में प्रकृति का सुन्दर एकांत वातावरण है। यहां के आध्यात्मिक वातावरण में ध्यान की गहन साधना होती है। भक्ति, साधना एवं सेवा का केन्द्र है। प्रत्येक दूज के दिन यहाँ लंगर का आयोजन होता है। 1000 के आसपास ग्रामवासी व राहगीर लंगर का लाभ लेते हैं। यहाँ का संयोजन श्रमण संघीय श्रावक समिति द्वारा श्री सुशील जैन, करनाल, महामंत्री प्रमोद जैन, कोषाध्यक्ष श्री अनिल जैन सुन्दर ढंग से कर रहे हैं। आदीश्वर धाम कुप्पकलां पंजाब में शिवाचार्य ध्यान सेवा समिति द्वारा प्रति माह सेवा हेतु लंगर का कार्यक्रम एवं सहधर्मियों के लिए नियमित भोजनशाला चल रही है। यहां पर श्री दर्शन मुनि जी म.सा. आदि ठाणा विराजमान हैं। प्रतिमाह दो दिवसीय आत्म-ध्यान

शिविर का आयोजन होता है। अनेक साधक नियमित यहाँ ध्यान साधना करने के लिए पहुँचकर लाभ उठा रहे हैं। आत्मार्थी साधक, अतेश जैन, रविन्द्र जैन साधनारत हैं।

जालंधर :- प्रत्येक माह शिवाचार्य ध्यान सेवा समिति द्वारा शिविर का आयोजन होता है। जालंधर के जागरूक साधक-साधिकायें इसका संचालन कर रहे हैं। विमल जैन 'अंशु', प्रभा जैन, रवीश जैन का सहयोग सराहनीय है। प्रत्येक माह लुधियाना से श्री अशोक जैन, साधिका रेनू जैन पहुँचकर सेवा का लाभ ले रहे हैं।

लुधियाना :- प्रत्येक बुधवार सिविल लाईन में आत्मध्यान क्लास का आयोजन हो रहा है। सुन्दर नगर में भी नियमित आत्म-ध्यान शिविर की क्लास चल रही है। प्रत्येक गंभीर शिविर में लुधियाना से 25 से 30 साधक सामूहिक रूप से पहुँचकर वीतराग साधना का लाभ उठा रहे हैं।

प्रशांत विहार :- दिनांक 1 अक्टूबर को एक दिवसीय बेसिक शिविर का आयोजन किया गया जिसमें करीब 60 से 70 भाई-बहनों ने आत्म-ध्यान का अनुभव प्राप्त किया। दिनांक 2 से 5 अक्टूबर तक चार दिवसीय गंभीर शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 19 साधु-साध्वियां एवं स्थानीय श्रीसंघ के अध्यक्ष, महामंत्री, कोषाध्यक्ष सहित विभिन्न प्रांतों से आये हुए 185 साधक-साधिकाओं ने आत्म-ध्यान शिविर का लाभ लिया।

○○



The religious identity of Jain's Term

'JAIN'

● Dharamvir Jain, *Ex-AGM, Punjab National Bank*

Our community is a distinguishable national minority group which has attained its status because of the asceticism and virtues of our religion in this country. We stand united against all odds and showcase our vitality by our undying brotherhood and love amongst our community where we shed all our biases and come under one congregation of jains. I very strongly feel and believe that this is a ceaseless and seamless fraternity.

Over the years I have contemplated while we proudly proclaim that we are Jains contrarily we have created a gap between us. As I observe that we being from such a modest society are divided amongst ourselves on the basis of various sectarian beliefs and various sub-communities. It is ironic and sad that many people from our community withhold their religious identity of being Jain and rather priorities their sect, thus making it difficult as well as disorienting others to classify them as Jain.

Without harming anybody's sectarian belief and community sentiments I would request you to orient our dwindling community about the importance of using Jain as a part of their surname without holding back their distinguishable gotras. The sheer mention of the surname 'JAIN'

in our surnames brings in the feeling of harmony and belongingness Jain is all the more important. Many of our people, for example Adanis, Sarabhais, Singhvis, Lodhas and countless others hold back their identity for some unknown reasons. The absoluteness of they Jains is largely unknown, unnoticed and naturally unacknowledged.

Also while our young generation is busy contributing and progressing with the expanding world they should not forget to mention Jain in all the papers ranging from admission forms to job applications or for that matter any other papers used for future records. I don't want to make it tedious for them by asking them to make it a documented change in the records which

they already possesses. But to make it an inseparable part of their name to be reflected in any further documentation and records they are to hold in future. This would make it easy for them to be recognized as a part of the bigger community but also will immerse them in a feeling of belongingness which is overshadowed only by the usage of the gotra.

With the current scenario I would not be surprised when gradually a phase will come where the younger generation will feel eclipsed and drifted from the essence of being a part of the Jain assemblage. Thereby I recommend that as we mature and flourish with our new generation taking our rich heritage of ethics, wisdom, traditions and rituals ahead with their new born babies they should invariably and suffix Jain in their name/surname in the process of registering their children with the government bodies.

If we fail to do this, I am afraid that our society will vanish in a couple of decades and community label and distinct identity would be wiped out from the territorial Map of this country and rest of the world.

To hold back such a monumental failure I in a very courteous and respectful manner urge you to orientate and help our community brothers and sisters acclimatize to the custom of using Jain as a surname along with their gotras for example: Rajesh Mutha as Rajesh Mutha Jain, Sunil sankhla as Sunil Sankhla Jain, Raseelabai Marlecha as Rasslabai Marlecha Jain, Usha Mutha as Usha Mutha Jain and Gyan Chand Lodha as Gyan Chand Lodha Jain.

With our rich belief system of ahimsa, folklore, institution of compassion, culture and non-violence we can continue to be a strong and vital link for development and progress of our motherland. We should be a force to reckon with as a United Jain Community.

It is my hope and earnest desire to see this when every Jain is recognised as a Jain all over the globe first by their name and then by their deeds.



Self Meditation

(An Experience)

Aman Batish

This meditation Shivar has been a deeply spiritual experience for me. I am not a Jain & was apprehensive about coming as i might feel out of place. More over 18th the day 'SHIVIR 'was to end, was coinciding with janmashtami and i am a devotee of Krishna but the lord himself inspired me to come and I thought if it is his will then there must be something for me in this 'SHIVIR' AND the lord was right it has been an experience of self discovery & realization. Sometimes, on watching a game from a distance, you think that you can play the games. But when you start playing it, you realize it is not so easy. And Then you develop a respect in players. Doing this shivar & trying to meditate has made me respect for all the people who have walked on this path & achieved Moksha. I bow down, before all the 'Sidhas', Nishaji, Shirish Muni ji and all the people who practise Dhyan. I cannot even sit still for the duration you can sit in Dhyan. You have achieved so much what I have done. I pay my deep respects to you as all these shivar's have changed my vision. I saw people here, who don't



have an iota of ego or pride in them. Perhaps this is what my lord wanted me to learn here too. The people have achieved so much & yet they have no pride, and look at me little bit of knowledge & so much pride. Being non jain I doubted what i might gain from this shivar and the lord has taught me knowledge has no religion. If you go with an open mind & heart and if you cloud your vision with religious biases & prejudices you don't see the gyan anymore, you only have doubts. Thanks for the experience & for crushing my false pride & ego. I actually don't have words to thank you. Thanks to Mr. Sushil Jain & Mr. Atul Goel for inspiring me to attend. and from now on my beloved lord you know best. A million thanks for this wonder of full experience.

Hare Krishna all these people do so much Tapasya & I do so little. Bless me with devotion, faith & Bhakti. I surrender my self at your feet.

○○

Thoughtness

● *Dev Atithi*

(Thoughts are the creation of mind. How the thoughts crop up? Can mind be made thoughtless? Yes. For it practise Self Meditation.)

There are two dispensations of emerging thoughts in the mind In its natural form. Firstly at the level of subconscious and secondly at the conscious level. Thoughts emanating from the subconscious invade the mind stealthily. Because someone is not aware of emanating thoughts at this level. Such thoughts sneak and settle in the mind to unsettle it. These thoughts engage the mind so intensely and deeply that mind has not been aware of it. These thoughts make the inner energy waste as it drains out the energy.

These thoughts drift to the past, ruling one should not have done what he has done, and vice versa. These thoughts drift to the future leading someone to aspire and hope for better life.

Its is intricate to gauge the depth and variety of thoughts because of the unawareness of the mind. Thoughts may be negative and positive. Negative thoughts bring about the feeling of fear, guilt, anxiety, in security, suspicion etc. Negative thoughts will trigger negative behavior and action. Negative thoughts breed anger, conceit, deceit and greed. The mind remains occupied with the thoughts of conflict and struggle. Positive thoughts are totally opposite to the negative thoughts, in which someone takes good things in life for granted.

Now a question arises how to escape from the trap of the thoughts? First of all one must try to escape from negative thoughts cropping up in the mind. Awareness is perquisite for it. If awareness is not practised then thoughts cannot be stopped cropping up. One should try to leave a positive impact on self and others. Ultimately one must have to achieve the state of vacuum of mind neither negative nor positive thoughts.

This state of mind could be attained throw practising SELF MEDITATION. Meditation practice makes the individual perfect in achieving the state of absolute awareness. Acharya Samrat Shri. Shivmuni Ji Maharaj states that through practicing self meditation the state of 'knower and seer is attained. If the self remains indulged in its natural form then the realization of self would be achieved automatically and the conscious and unconscious level of mind would be automatically disappeared. Then in this state Self views the Self, the mind becomes fully thoughtless. To achieved the state of thoughtlessness one must practice Meditation. The best way of practicing of meditation is the 'SELF MEDITATION' under the guidance of an experienced and enlightened preceptor. Fix your mind over inhaling and exhaling breath reciting merely the term 'SOHAM', SOHAM', -----

शिवाचार्य जन्मोत्सव विविध प्रकल्पों के साथ हर्षोल्लास से मनाया गया

व्यक्त भारतवर्ष से उमड़े श्रद्धालुओं ने दी शुभकामनाएँ

■ जितेन्द्र जैन, महामंत्री, प्रशांत विहार

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान आचार्य सम्राट पूज्य श्री शिवमुनि जी म. सा. का 73वां जन्मोत्सव एस.एस. जैन सभा, प्रशांत विहार के तत्वावधान में ध्यान, तप, सेवा, साधना के विविध प्रकल्पों द्वारा मनाया गया। इस अवसर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष से श्रद्धालु उमड़े व अपनी मंगल कामनाएँ आचार्य श्री जी को प्रदान कीं।

रक्तदान शिविर : दिनांक 14 सितम्बर 2014 (रविवार) को अन्तर्राष्ट्रीय मानव मिलन द्वारा श्री एस.एस. जैन सभा व रोटरी क्लब द्वारा ऑफ कैपिटल के सहयोग से भव्य रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ जिसमें 113 भाई-बहनों ने रक्तदान किया। इस शिविर को सफल बनाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मानव मिलन के सभी सदस्यों के साथ श्री नवनीत जैन, श्री संजीव जैन, श्री दिनेश सुराना आदि सभी का उल्लेखनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

फ्री हेल्थ चेकअप कैम्प :- दिनांक 14 सितम्बर 2014 (रविवार) को दिल्ली जैन कॉन्फ्रेंस के प्रयासों से शिवाचार्य जन्मोत्सव पर फ्री हेल्थ चेकअप कैम्प का आयोजन जैन स्थानक, प्रशांत विहार में हुआ। इस अवसर पर डॉ. नागेश जैन की टीम ने 120 व्यक्तियों की ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर, आंख, कान, नाक, गला, हृदय, केलिशियम आदि विविध प्रकार की जांच की। आचार्य भगवन् ने इस अवसर पर मानव सेवा ही ईश्वर

सेवा है का संदेश जन-जन को दिया। जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से डॉ. नागेश की टीम का स्वागत-अभिनंदन भी इस अवसर पर किया गया।

श्रावक समिति का वार्षिक अधिवेशन : दिनांक 17 सितम्बर 2014 को प्रातः 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक श्रावक समिति का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। वर्ष-भर में हुए शिक्षा, सेवा, स्वास्थ्य व साधना के कार्यक्रमों का लेखा-जोखा श्रावक समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमतिलाल जी कर्नावट, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रविन्द्रनाथ जैन, राष्ट्रीय महामंत्री श्री सतीश जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री अनिल जैन आदि ने सबके समक्ष प्रकट किया। इस अवसर पर निकट में होने वाले बृहद् साधु-सम्मेलन की परिचर्चा हुई जिस पर भारतवर्ष के समस्त प्रांतों से आये सभी गणमान्य व्यक्तियों ने अपनी सेवा देने का भाव प्रकट किया।

सामूहिक एकासन दिवस : दिनांक 17 सितम्बर 2014 को शिवाचार्य जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सामूहिक एकासन का तप रखा गया। जिसमें सभी ने बढ़ चढ़कर एकासन की तपस्या करते हुए शिवाचार्य श्री जी को जन्मोत्सव की बधाई प्रेषित की।

शिवाचार्य भक्ति संध्या : दिनांक 17 सितम्बर 2014 को दोपहर 1 बजे से सायं 5 बजे तक शिवाचार्य भक्ति संध्या का आयोजन हुआ। जिसमें आचार्य श्री जी को जन्मोत्सव की बधाई देने के लिए विदुषी

साध्वी श्री श्रुति जी म.सा., श्री रूपिका जी म.सा., श्री मृदुल जी म.सा., श्री प्रांजल जी म.सा. व पंजाब कोकिला रजनी जैन 'आर्या', अन्तर्राष्ट्रीय कवि विनय देवबंदी, चंदनबाला महिला मंडल, प्रशांत विहार की प्रधान श्रीमती वीना जैन, महामंत्री शीला जैन, मंत्री रेखा जैन, ज्योति जैन, नीलम सिंघवी एवं साथ ही साथ छोटी-छोटी बालिकाओं कुमारी आरती जैन, संध्या जैन व तपस्वी मदन जैन (सिरसा) ने अपनी भावनाओं को भक्ति गीत के माध्यम से प्रकट किया।

शिवाचार्य जन्मोत्सव : दिनांक 18 सितम्बर को सूर्योदय की प्रथम किरण से ही शुभकामना देने वालों का तांता जैन स्थानक में लग गया। प्रातः 8.30 बजे जैन स्थानक प्रशांत विहार से शिवाचार्य श्री जी लगभग 80 साधु-साध्वी वृंद एवं अनेक श्रावक-श्राविकाओं के साथ शोभा यात्रा के रूप में समारोह स्थल जापानी पार्क पहुँचे। पूरे रास्ते महिलाएँ आचार्य श्री के जन्मोत्सव पर मंगल गीत गाती रही व युवावर्ग आचार्य भगवन् श्री शिवमुनि जी म.सा. के जयकारों का उद्घोष करते हुए बधाई दे रहे थे। जापानी पार्क में भारतवर्ष के लगभग सभी प्रान्तों से पहुँचे हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने जयकारों के उद्घोष के साथ आचार्य श्री जी का शिवाचार्य समवसरण में अभिनंदन किया।

श्रमण संघीय मंत्री श्री शिरीष मुनि जी म.सा. ने जन्मोत्सव के कार्यक्रम को आध्यात्मिक रूप से प्रारम्भ करते हुए 30 मिनट लोग्स का जाप एवं कायोत्सर्ग कराया।

शिवाचार्य उद्बोधन : सम्पूर्ण भारतवर्ष से उमड़े श्रद्धालुओं को अपने मांगलिक उद्बोधन में आचार्य श्री ने कहा कि जन्म जयंती मनाना कोई महत्व की बात नहीं है। महत्व इस बात का है तुमने जन्म व मरण को जाना है या नहीं। आपने मुझे जन्मोत्सव की बधाई दी। बधाई देह को दी जाती है और देह मिटने वाला है। मैं आत्मा हूँ और आत्मा अजन्मा है, मैं शुद्ध आत्मा हूँ,

मेरा जन्म, मरण हुआ नहीं तो फिर क्या है जन्म? क्या है मृत्यु? ये शाश्वत प्रश्न हैं जिनकी खोज में अनेक महापुरुषों ने अपना जीवन लगा दिया। आंख का खुलना जन्म है और बंद होना मृत्यु है। इसके बीच का जो समय है उसमें हमने अपनी जागरूकता, अप्रमत्तता को बढ़ाना है। आज मैं अपने 72 वर्षों का निरीक्षण करता हूँ तो पता लगता है कि जीवन के 30 वर्ष अध्ययन में बीत गये। उसके बाद दीक्षा हुई, दीक्षा के बाद 25 वर्ष प्रभु महावीर की साधना की खोज में लग गये। अब अरिहंत कृपा से वीतराग साधना प्राप्त हुई है। अब लक्ष्य बदल गया। मुझे कर्म निर्जरा करनी है और मुक्ति को प्राप्त करना है। ध्यान साधना करने के बाद जिनवाणी का सच्चा सार मुझे प्राप्त हुआ है।

शिवाचार्य श्री जी ने 20 मार्च से 29 मार्च 2015 तक इन्दौर नगरी में होने वाले बृहद् श्रमण संघीय साधु-सम्मेलन की चर्चा करते हुए कहा कि हमने अब अपना समग्र साधु-सम्मेलन की सफलता में लगाना है। चतुर्विध श्रीसंघ सम्मेलन को सफल बनाने के लिए पुरुषार्थरत हो जाये। साधु-साध्वियों की सेवा, विहार आदि में सभी ने अपनी सक्रियता दिखानी है। मैं जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नेमनाथ जी जैन व श्रावक समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमतिलाल जी कर्नावट से अनुरोध करूँगा कि वे युवा शक्ति, महिला शक्ति व समस्त श्रावक वर्ग को इस सम्मेलन में सक्रिय बनायें तथा बृहद् साधु-सम्मेलन आयोजन समिति का अतिशीघ्र गठन हो। प्रत्येक साधु-साध्वी को निर्मल साधुता का पालन करना है। पद नहीं समर्पण भाव में आना है। इच्छा, आकांक्षा का त्याग करना है, तभी हम एक उत्कृष्ट आदर्श स्थापित कर पायेंगे।

आचार्य श्री जी ने गौ हत्या व लव जिहाद जैसे विषयों पर प्रतिबंध लगाने हेतु सकल जैन समाज को आह्वान करते हुए कहा कि राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, व गांधी के देश में गऊ माता काटी जाये ये

बड़े शर्म की बात है। विश्व में दूध की नदियां बहाने के लिए अपनी पहचान रखने वाले इस भारतवर्ष की पहचान यदि गौ-मांस के बड़े निर्यातक के रूप में हो तो इससे बड़ा भारत माता का अपमान नहीं। अतः मांस निर्यात बन्द हो। गौ-हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगे। इस हेतु सभी कार्यरत हो जाओ। हमें गौमाता की सेवा करनी है। अंत में आचार्य श्री जी ने अपने जन्मदाता माता-पिता, आराध्य गुरुदेव, शासन देव, शासन माता के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की तथा आये हुए समस्त साधु-साध्वी, श्रावक, श्राविकाओं को साधुवाद प्रदान किया।

साधु-साध्वी वृंद द्वारा मंगल भावनाएँ :
 उपाध्याय प्रवर श्री रविन्द्र मुनि जी म.सा., श्रमण संघीय मंत्री श्री शिरीष मुनि जी, अहिंसा संघ के श्री लोकेश मुनि जी म.सा., अर्हत् संघ के श्री विवेक मुनि जी म.सा., स्वामी अग्निवेश जी, मधुर वक्ता डॉ. सुयोग ऋषि जी, श्री अमित मुनि जी, हेमकुल दिवाकर श्री ऋषभ मुनि जी, उप प्रवर्तक श्री आशीष मुनि जी, मधुर गायक युवा मनीषी श्री शुभम् मुनि जी, मधुर वक्ता श्री शमित मुनि जी, मधुर गायक श्री निशांत मुनि जी, महासाध्वी डॉ. सरिता जी म.सा., महासाध्वी सुशील कुमारी 'बेबी' जी, महासाध्वी श्री कौमुदी जी, महासाध्वी श्री राधा जी म.सा. महासाध्वी श्री मनीषा जी, महासाध्वी श्री शशिप्रभा जी, दिव्य साधिका श्री रश्मि जी म.सा., महासाध्वी डॉ. शिवा जी, साध्वी वैभवश्री जी, महासाध्वी श्री मनोरमा जी म.सा., साध्वी श्रुति जी म.सा., साध्वी श्री सूर्या जी म.सा., साध्वी श्री प्रज्ञा जी म.सा. आदि ने भजन व भावनाओं के रूप में आचार्य श्री को 73 वें जन्मोत्सव पर बधाई दी।

साधु-साध्वीवृंद से प्राप्त मंगल संदेश :
 गच्छाधिपति आचार्य श्री नित्यानंद जी, गच्छाधिपति आचार्य श्री अभयदेव सूरि जी, आचार्य महाश्रमण जी,

मुनि तरुण सागर जी, आचार्य सुभद्र मुनि जी, उपाध्याय डॉ. श्री विशाल मुनि जी महाराज "वाचनाचार्य", उपाध्याय प्रवर श्री जितेन्द्र मुनि जी महाराज, लोकमान्य संत, वरिष्ठ प्रवर्तक श्री रूपचंद जी म. "रजत", प्रवर्तक श्री रमेश मुनि जी महाराज, महाराष्ट्र प्रवर्तक, महाश्रमण श्री कुन्दन ऋषि जी महाराज, उत्तर भारतीय प्रवर्तक, महाश्रमण श्री सुमन मुनि जी महाराज, राष्ट्रसंत, प्रवर्तक श्री गणेश मुनि जी महाराज, श्रमण संघीय मंत्री श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज, श्रमण संघीय मंत्री श्री आशीष मुनि जी महाराज, श्रमण संघीय मंत्री श्री कमल मुनि जी महाराज "कमलेश", राजर्षि श्रमण संघीय सलाहकार श्री सुमति मुनि जी महाराज, श्रमण संघीय सलाहकार श्री रमणीक मुनि जी महाराज, श्रमण संघीय सलाहकार डॉ. श्री राम मुनि जी महाराज "निर्भय", प्रवर्तिनी, मेवाड़ गौरव डॉ. श्री चंदना जी महाराज एवं अनेक साधु-साध्वीवृंद द्वारा जन्मोत्सव के मंगल बधाई संदेश प्राप्त हुए।

श्रावक-श्राविकाओं द्वारा मंगल भावनाएँ:
 श्रावक समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमतिलाल जी कर्नावट, कॉन्फ्रेंस के पूर्व अध्यक्ष श्री अविनाश जी चोरडिया, राष्ट्रीय युवाध्यक्ष श्री महेन्द्र पगारिया, कार्यकारी महामंत्री श्री जिनेश्वर जैन, पूना श्री संघ के अध्यक्ष श्री कचरदास पोरवाल, श्री राजकुमार जैन फरीदाबाद, श्री गजराज सिंह झामड़, श्री रोशनलाल ओरडिया, श्री गजेन्द्र चंडालिया, श्री रोहित जैन, कॉन्फ्रेंस महिला शाखा की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती रेनु जैन, श्रीमती विनिता ओरडिया, श्रीमती नीलम सिंघवी, श्रीमती प्रवीण जैन, श्रीमती उषा बांसल, श्रीमती किरण चोपड़ा, दिल्ली प्रदेश श्रावक समिति महिला शाखा की अध्यक्षा श्रीमती अलका जैन व उनकी पूरी टीम ने जन्मोत्सव पर बधाई दी। कई वक्ताओं ने भगवन् द्वारा घोषित साधु-सम्मेलन का आने वाले समय में इतिहास का स्वर्ण अध्याय बताया।

वरिष्ठ नागरिक केसरी कल्ब की संपादक श्रीमती किरण चोपड़ा ने आचार्य श्री जी को जन्मोत्सव की बधाई देते हुए कहा कि मुझे फ़ख है कि मेरी जन्म भूमि जालंधर है जो आचार्य श्री की जन्म भूमि के नजदीक है। उन्होंने कहा कि मैं जन्म से नहीं लेकिन आचार्य श्री जी के आशीर्वाद से संस्कार रूप से जैन हूँ।

वीतराग साधिका निशा जी ने ध्यान साधना का महत्व व आचार्य श्री द्वारा 25 वर्ष की कठोर साधना के बाद ध्यान की शुद्धतम साधना की खोज के बारे में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आने वाला युग आचार्य श्री को ध्यान साधना के लिए याद करेगा।

विमोचन : आचार्य सम्राट श्री शिवमुनि जी म.सा. के जन्मोत्सव पर श्रावक समिति की आध्यात्मिक विचारों से ओत-प्रोत नव प्रकाशित मासिक पत्रिका 'शिव ध्यान धारा' का विमोचन श्री राजकुमार ओसवाल व श्री शांतिलाल ओसवाल (फरीदाबाद) वालों ने किया। इस पत्रिका का संपादक श्री मुन्नालाल जैन निवासी सेक्टर-5, रोहिणी, दिल्ली को बनाया गया है। युवा मनीषी श्री शुभम् मुनि जी के आध्यात्मिक पुरुषार्थ से उत्तराध्ययन सूत्र का विमोचन श्रीमती विमला जैन व अजय जैन द्वारा किया गया। श्री शिरीष मुनि जी द्वारा दी गई साधना पर "ध्यान से ज्ञान" नामक सी.डी. का विमोचन श्री सुशील जैन (करनाल) द्वारा किया गया। इस सी.डी. में बेसिक ध्यान शिविर के व्यावहारिक प्रवचनों की शृंखला है जिसे सुनकर आप घर बैठे आत्म-ध्यान बेसिक शिविर कर सकते हैं।

आगामी चातुर्मास एवं क्षेत्र स्पर्शना विनंतियां: समस्त भारतवर्ष से उमड़े संघों में आचार्य श्री के आगामी सन् 2015 का चातुर्मास अपने क्षेत्रों में कराने की होड़ थी व उसी कड़ी में इन्दौर श्री संघ

से महामंत्री श्री गजराज सिंह झामड़, जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री श्री रमेश भंडारी व कार्यकारी महामंत्री श्री जिनेश्वर जैन ने अपनी विनंती रखी व सूरत श्रीसंघ की ओर से श्री रोशनलाल जी ओरड़िया, श्री गजेन्द्र चंडालिया व रोहित जैन ने जोरदार तरीके से सूरत में आगामी सन् 2015 के चातुर्मास की विनंती रखी। इस अवसर पर सवाईमाधोपुर आदि श्रीसंघों ने राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र सहित दक्षिण भारत के अनेक क्षेत्रों ने क्षेत्र स्पर्शना की विनंती रखी।

शिवाचार्य जन्मोत्सव समारोह की अध्यक्षता जैन कॉन्फ्रेंस के प्रमुख मार्गदर्शक श्री आनंद प्रकाश जैन ने की। स्वागताध्यक्ष के रूप में जैन कॉन्फ्रेंस के वरिष्ठ मार्गदर्शक श्री सुरेश कुमार जैन (प्रशांत विहार) व श्री सुशील जैन (प्रशांत विहार) रहे। सरकंक श्री रामकुमार जैन व श्री खजांची लाल जैन संघ के चेयरमैन श्री मोहनलाल जैन, प्रधान श्री जगदीश प्रसाद जैन, कोषाध्यक्ष श्री शिखरचंद जैन, मंत्री श्री रामभगत जैन व समस्त कार्यकारिणी ने गणमान्य अतिथियों का स्वागत अभिनंदन किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्री एवं प्रशांत विहार श्रीसंघ के महामंत्री श्री जितेन्द्र जैन ने किया।

इस अवसर पर सूरत, इन्दौर, सिरसा, गुडगांव, पानीपत, रतिया, करनाल, मालेरकोटला, हैदराबाद, सिकन्दराबाद, उड़ीसा, कटक, अलवर, नागपुर, कोटा, अहमदाबाद, जम्मू, अमृतसर, जालंधर, लुधियाना, चंडीगढ़, अंबाला, पंचकुला, रोपड़, नालागढ़, दिल्ली, जयपुर, भीलवाड़ा, सवाईमाधोपुर, आसीन्द, उदयपुर, पूना, अहमदनगर, नाशिक, शिरडी, औरंगाबाद, जालना, बैंगलोर, चेन्नई, देहरादून, मेरठ आदि अनेक क्षेत्रों से श्रीसंघ एवं भक्तजन उपस्थित थे।

○○

आगामी आत्म-ध्यान-साधना शिविर

बेसिक शिविर (एक दिवसीय)

गम्भीर शिविर (चार दिवसीय)

(1) 25 अक्टूबर 2014, शनिवार

(1) 26 से 29 अक्टूबर 2014, रविवार से बुधवार

आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी म.सा. की संभावित विहार यात्रा

दिनांक	स्थान	दूरी (कि.मी.)	सम्पर्क सूत्र	मोबाइल नं.
7 नवंबर 2014 प्रातः	प्रशांत विहार	0 कि.मी.	श्री जितेन्द्र जैन	09810062967
श्री एस.एस. जैन सभा, जैन स्थानक ए-ब्लाक, प्रशांत विहार, आर्य समाज मंदिर के सामने, दिल्ली-110085				
➤ मुमुक्षुओं की मंगल केसर रस्म प्रातः 8.15 बजे से 9.30 बजे तक ➤ प्रशांत विहार चातुर्मास से अशोक विहार के लिए मंगल विहार प्रातः 11.00 बजे				
7 नवंबर 2014 सायं	अशोक विहार	4 कि.मी.	श्री महेन्द्र जैन	09873302225
श्री एस.एस. जैन सभा (रजि.) एफ-ब्लॉक, फेज-1, अशोक विहार, दिल्ली -110052				
8 नवंबर 2014	जैन भवन, गोल मार्केट	9 कि.मी.	श्री रमेश भण्डारी	09302103817
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-1				
9 नवंबर 2014 प्रातः	बालयोगी सभागार, संसद भवन	4 कि. मी.	श्री सुभाष ओसवाल	09810045440
बालयोगी सभागार, संसद भवन, नई दिल्ली-110001				
➤ ब्रेल लिपि में प्रभु महावीर के संदेश का लोकार्पण समारोह एवं साध्वी युगल निधि कृपाश्री की स्वर्ण जन्मजयंती				
9 नवंबर 2014 सायं	करोल बाग	9 कि. मी.	श्री रोशन लाल जैन	09891486895
प्रेम भवन, 16, अजमल खां पार्क एरिया, करोल बाग, नई दिल्ली-5				
10 नवंबर 2014	अशोक विहार	6 कि.मी.	श्री महेन्द्र जैन	09873302225
श्री एस.एस. जैन सभा (रजि.) एफ-ब्लॉक, फेज-1, अशोक विहार, दिल्ली -110052				
➤ प्रतिदिन प्रवचन प्रातः 8.30 से 10.00 बजे तक प्रतिदिन सायं भजन 3.00 से 4.00 बजे तक ➤ 12 नवंबर, मुमुक्षुओं की मंगल मेंहदी रस्म दोपहर 2.00 बजे से 4.30 बजे तक ➤ 13 नवंबर, मुमुक्षुओं की मंगल तिलक रस्म प्रातः 7.00 बजे से जैन स्थानक में ➤ 13 नवंबर, मुमुक्षुओं की मंगल महाभिनिष्क्रमण यात्रा प्रातः 8.00 बजे से जैन स्थानक से रजवाड़ा पैलेस ➤ 13 नवंबर मुमुक्षुओं की जैन भागवती दीक्षा समारोह प्रातः 9.30 बजे से रजवाड़ा पैलेस में				

दिनांक	स्थान	दूरी कि.मी.)	सम्पर्क सूत्र	मोबाइल नं.
15 नवंबर 2014	जैन भवन, गोल मार्किट	9 कि.मी.	श्री रमेश भण्डारी	09302103817
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001				
16 नवंबर 2014	दादावाड़ी	16 कि.मी.	श्री अतुल जैन	09811075336
जैन दादावाड़ी, महेन्द्र कुमार भंसाली मार्ग, कृतुब मीनार मेट्रो स्टेशन के सामने, महरौली, दिल्ली-110030 फोन नं. - 011-26642640				
17 नवंबर 2014	महरौली	2 कि.मी.	श्री अभय जैन	09810293840
एस. एस. जैन सभा - जैन स्थानक, 821, मैन बाजार, महरौली, नई दिल्ली - 110030				
18 नवंबर 2014	डी.एल.एफ, गुडगाँव	10 कि.मी.	श्री सुरेन्द्र जैन	9911420207
कर्मल श्री सुरेन्द्र जैन, एम-3/19, डी.एल.एफ, फेस-3, गुडगाँव, हरियाणा				
19 नवंबर 2014	गुडगाँव	4 कि.मी.	श्री प्रेमचंद जैन	09211308367
श्री एस.एस.जैन सभा, जैन स्थानक, न्यू रेलवे रोड, गुडगाँव-122001 ¼हरियाणा½ श्री संजय जैन :- 09811282441				
➤ 20 नवंबर 2014 को मुमुक्षुओं की बड़ी दीक्षा समारोह प्रातः 9.30 बजे से जैन स्थानक में सम्पन्न होगी।				
सम्पर्क सूत्र :- आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनि जी म.सा. श्री एस.एस. जैन सभा, जैन स्थानक ए-ब्लाक, प्रशांत विहार, आर्य समाज मंदिर के सामने, दिल्ली-110085 <i>Visit us our website :</i> www.jainacharya.org www.shivacharyaji.org <i>Email :</i> shivacharyaji@yahoo.co.in shivacharyaji108@yahoo.com <i>Facebook Page :</i> shivmuni <i>Twitter :</i> jainacharya <i>Blogger :</i> acharyashivmuni <i>YouTube :</i> jainacharyaji <i>Android App :</i> JAINACHARYA Our Contact No : 09350111542				

आरिहंत वाणी

—वीतराग साधिका निशा जैन

प्र.1. इस काया में आत्मा क्या है?

उत्तर—मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, आत्मा हूँ, आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ। सारे मिथ्यात्व का अंत करके मैं इस सत्य को स्वीकार कर रहा हूँ। मैं देह नहीं, संबंध नहीं, मैं मात्र एक आत्मा हूँ। मेरा पर से कोई संबंध नहीं। साढ़े तीन हाथ की इस काया में मैं आत्मा एक निवासी हूँ।

प्र.2. किसका त्याग करें?

उत्तर—मैं मनुष्य नहीं, मैं पुरुष या स्त्री नहीं, मैं आत्मा हूँ। पुद्गल के बने इस देह में मैं आत्मा एक निवासी हूँ। पुद्गल भिन्न है, मैं आत्मा भिन्न हूँ। दोनों के गुण धर्म जुदा हैं। हे आत्मन्! साधना कक्ष में आने से पूर्व आप अनेकों संबंधों से घिरे थे, आपका पर से नाता था। आपने पर के लिए, देह के लिए संबंधों के लिए, अनंत कर्म आश्रव किये, इन्द्रियों के विषयों की पूर्ति में अनेक प्रकार के आरंभ-समारंभ किये, इस भव में, इससे पूर्व भव में व भवों-भवों की यात्रा में, आपने निज मिथ्यात्व को पुष्ट किया। आज उस सबसे पीछे हट जाओ। न ये देह तुम्हारा है, न पूर्व का कोई देह तुम्हारा था। तुम एक आत्मा हो।

प्र.3. ध्यान में कैसे प्रवेश करें?

उत्तर—एक आत्मा जो अपनी यात्रा में भिन्न-भिन्न देह धारण करता है। तुम आत्मा हो, तुम आत्मा हो, तुम आत्मा और सब में परमात्मा है।

सोऽहं, सोऽहं, सोऽहं, सोऽहं। धीरे-धीरे चित्त को शांत व शून्य कीजिये, ध्यान के दौरान विचार आये, निद्रा आये, आलस्य आये, पुनः मन ही मन सोऽहं का आलम्बन लिया जा सकता है। अन्तिम स्थिति शान्त व शून्य की है।

प्र.4. ध्यान के बीच सजगता सूत्र?

उत्तर—अपने करीब आइये, अपने में स्थित हो जाइये, यहां अनंत सुख है। जो सुख पुद्गल नहीं दे सकते उससे कई गुना ज्यादा, अनंत सुख तुम में है। तुझ आत्मा में है।

प्र.5. आत्मा कैसा है?

उत्तर—आप आत्मा हैं, आप आत्मा हैं, आत्मा हैं, आप सिर्फ आत्मा है, आत्मा अकेला है। अनादि से विचरते हुए, आत्मा का कोई संबंधी नहीं बना। आत्मा का कोई नहीं बनेगा, आत्मतत्व अकेला है। हे जीव! हे आत्मन्! तुम अकेले हो, भले ही आज फिर तुम्हारी देह अनेको संबंधों से घिरी हो पर जीवात्मा अकेला है। संबंध देह के हैं। आत्मा अकेला है।

प्र.6. आत्म-ध्यान में साधक सुख कैसे पाता है?

उत्तर—एकत्व में अनंत सुख है, हे आत्मन्! मिथ्यात्व के कारण पुद्गलों में सुख खोजते गये, आज सम्यक्त्व की शरण में आकर निज आत्मा में सुख की खोज कीजिये। यह सुख शाश्वत है, इसकी आदि अंत नहीं हैं। इसकी व्याख्या नहीं है।

अनंत सुख वाला तू आत्मा है। सुख इन्द्रियों में नहीं है। सुख संबंधों में नहीं, सुख विषयों की पूर्ति में नहीं है। सुख अनुरागी के मिलन में नहीं है। सुख तुममें है। अनंत है।

प्र.7. आत्म-ध्यान शिविर में किसका पुरुषार्थ करते हैं?

उत्तर—हे अनंत सुख वाले आत्मा अपने भवों-भवों के मिथ्यात्व का अंत करके भीतर के अनंत सुख को आत्मसात् कर ले। यहां आप शाश्वत सुख को आत्मसात् करने आये हैं। यहां आप अपना मिथ्यात्व तोड़ने आये हैं। यहां आप अपने भवों-भवों के प्रमाद का अंत करने आये हैं। हे आत्मन्, अपने को जान! अपने को समझ! अपने को आत्मसात् कर! ये वीतराग यात्रा है। यहां तू अकेला है। यहां

तेरा कोई नहीं। तू अनादि से अकेला है। तू आज भी अकेला है। अपने घाती कर्म को तोड़कर अपने को सिद्धशिला में स्थित करने का यहाँ पुरुषार्थ किया जा रहा है।

प्र.8. मुक्ति किसमें है?

उत्तर—हे आत्मन्! अकेला हो जा। समस्त साधकों के मध्य रहता हुआ भी तू अकेला है। एक-एक श्वास के साथ इस एकत्व को आत्मसात् कर। मुक्ति एकत्व में है। संयोग में मुक्ति नहीं है। पुद्गलों के सुख शाश्वत नहीं हैं। सुख आत्मा में है। हे आत्मन्! आत्मा के अनंत सुख को आत्मसात् कर ले। अकेला हो जा फिर भी निर्णय तुम्हारा, शेष जैसी तुम्हारी आत्मा को सुख।